राज
कामिक्स
विशेषांक
संख्या 57
नागपाशा
नागराज
एक
रोमांचक
विशेषांक
एक
आकर्षक
स्टीकर
मुफ्त
amaan.cooldude18
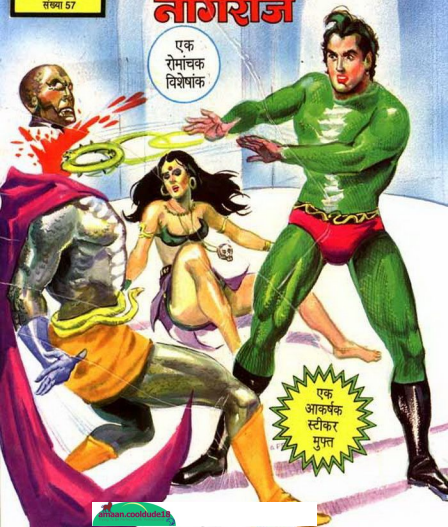
नागपाश
हा हा हा ••• नागराज को बन्दी बना मेरे सामने लाकर तुमने बहुत अच्छा काम किया है नागतंत्रिका नगीना, अब एक तरफ हट जा और देख कि अपनी शक्ति से नागराज के चिथड़े कैसे उड़ाता है•••
कथा: अनुपम सिन्हा हनीफ अजहर
चित्र: अनुपम सिन्हा इंकिंग: बिठ्ठल कांबले
संपादक: संजय गुप्ता मनीष गुप्ता

अपनी जगह से एक इंच भी ना हिली नगीना –
रुक जा, नागपाशा, मैं नागराज को यहां बन्दी बनाने की जगह लाश बनाकर भी ला सकती थी...
... लेकिन मैं नागराज की लाश देखने से पहले वह खजाना देखना और हासिल करना चाहती हूं, जो तुम नागराज को जिन्दा या मुर्दा तुम तक पहुंचाने वाले को इनाम में देने वाले थे...
... वह मेरा इनाम है नागपाशा। मुझे वह मिलना ही चाहिए।
इनाम! हा हा हा... इनाम तो तुम्हें मिलेगा नागतंत्रिका, लेकिन वह इनाम खजाने के रूप में नहीं...
... मौत के रूप में होगा!
तड़
ओह, धोखा!
हा हा हा... तुम इसे जो कुछ भी कह लो सुन्दरी, लेकिन मैं इसे व्यापार कहता हूं। और अच्छा व्यापारी वही होता है जो हमेशा अपने फायदे की सोचे। हा हा हा!
मेरा नाम नगीना है, नागपाशा! नागतंत्रिका नगीना!
तेरे जैसे कई नागपाशा, मेरे जाल में फंसकर दूसरे लोक की सैर कर रहे हैं।
सरोर
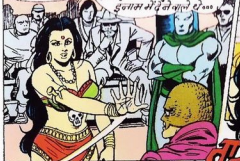
... मैं तुम्हें भी उनके ही पास, नरक में भेज देती हूं।
नरक में पहुंचने वालों का तो मैं लीडर हूं, नगीना! क्योंकि वहां की आबादी के ज्यादातर लोग...
कड़ड़ड़ाम
... मैंने ही वहां पर भेजे हैं।
नागपाशा काफी शक्तिशाली है। ऐसे तो हमारी लड़ाई काफी देर तक चलती रहेगी...
... पर मेरा फायदा इससे जीतने में नहीं है। अगर ये मेरे हाथों से मर गया तो मेरा ही नुकसान होगा...
... मेरा फायदा तभी है...
आह!
खचाक
... जब मैं इसके हाथों से मर जाऊं... आऽऽऽह!

नगीना का जमीन पर फुटबाल की तरह लुढ़कता सिर देखकर, जहां पर कई दिमाग पूरी तरह से सुन्न हो गए...
धड़. धड़
... वहीं पर कई मस्तिष्कों में प्रश्नों की बाढ़ उमड़ पड़ी—
ओह! एक पल को मुझे ऐसा लगा, मानो नगीना जान-बूझकर मरने को तैयार हो गई!
नगीना को मैं आसानी से बचा सकता था। पर उसने मुझे दखलअंदाजी करने को सख्त मना किया था, चाहे कुछ भी हो जाए!
उन दिमागों में दौड़ती सोचों को भंग किया नागपाशा के एक वहशी ठहाके ने—
नागपाशा का वह मामूली सा वार, नगीना आसानी से बचा सकती थी। उसने आखिर ऐसा क्यों किया?
पर वह 'कुछ भी' नगीना की मौत होगा, यह तो मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था!
हा हा हा! अब तेरी बारी है नागराज, तेरी... नागपाशा के दुश्मन नम्बर एक की, तेरे मरने के बाद मेरे उद्देश्य की राह से सबसे बड़ा कांटा साफ हो जाएगा... इसलिए...
मर नागराज मर!
कड़.ड़.
अभी तो सिर्फ मेरे हाथ ही पीछे बंधे हैं नागपाशा! अगर मेरा पूरा शरीर भी इन तांत्रिक बंधनों में जकड़ा होता...

... तो भी तेरे वार मुझे छूने में नाकामयाब रहते, नागपाशा !
ओह ! नागपाशा बगैर सोचे-समझे वार कर रहा है !
यह पागल हो गया है ! हमें भी मार डालेगा !
भागो यहां से !
बहते पानी के रेले की तरह, माफिया बॉसों और अपराधियों की भीड़ हॉल से बाहर भागी-
भागो भागो भागो
नागपाशा ने उनकी तरफ देखा तक नहीं। उन मच्छरों की अब उसे कोई जरूरत नहीं थी-
कड़ाड़ाड़ाम
उसका शिकार मांद में आ चुका था-
अब सिर्फ उसका 'शिकार' करना बाकी था-
ओह ! नहीं ! नहीं !
पी पी पी
क्या हुआ गुरुदेव ? आप चौंके क्यों ? और... और आपके यंत्रों में ये ध्वनि भी कैसी हो रही है ?

बेहद तेजी से बोला वह—
तुम्हारे प्रश्नों का जवाब तुम्हें जल्द ही मिल जाएगा केटूंकी, लेकिन फिलहाल तुम शीघ्र ही नागपाशा के पास पहुंचो और उसे नागराज को खत्म करने से रोको!
... वरना अनर्थ हो जाएगा... जाओ!
अच्छा गुरुजी!
केटूंकी तेजी से उस विचित्र कक्ष से बाहर निकल गया—
और वहां अकेला रह गया गुरुदेव अचंभे से भरा यंत्रों से खिलवाड़ करने लगा—
ओह! सभी यंत्र बताते हैं कि वह वही है...
... लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि वह वही आदमी कैसे हो सकता है?
पीं पीं
इन सब हादसों के दौरान, किसी का भी ध्यान नगीना के शरीर पर नहीं गया था—
जो धीरे-धीरे अपने आप धूल में परिवर्तित होती जा रही थी—
यह दृश्य न नागपाशा देख रहा था...
... और न ही नागराज—
ओह! तीव्र विष फुंकार!

बस नागराज... बहुत हुआ। अगला क्षण अब तेरे जीवन का अंतिम क्षण होगा।
दूसरे ही क्षण नागपाशा की शक्तियों का वह 'गोला' तोप के गोले की भांति नागराज के सीने से टकराया—
धम्म
इसी के साथ बुरी तरह डकराता हुआ नागराज...
...अपने मुंह से खून उगलता नीचे आ गिरा—
आह
जमीन पर गिरकर वह कुछ पल जल-बिन मछली की भांति छटपटाया—
और फिर—
शान्त हो गया नागराज। सदा के लिए शान्त हो गया। हा हा हा।
मर गया नागराज। मैंने नागपाशा ने मार डाला उसे। हा हा हा।
तभी—
नागपाशा जी, आपको गुरुदेव ने अपनी प्रयोगशाला में बुलाया है, जल्दी।
केटूंकी!

बिना कोई क्षण गंवाए केंद्र की के साथ चल पड़ा नागपाशा-
गुरुदेव को अचानक मुझसे क्या काम पड़ गया जो मुझे यूं तुरन्त ही बुलवाया है!
उस प्राचीन प्रयोगशाला में नागपाशा के प्रवेश करते ही वह दौड़ा-दौड़ा उनके पास पहुंचा-
नागपाशा, तुम अभी नागराज नामक जिस व्यक्ति से लड़ रहे थे, कहां है वो? व... वो सही-सलामत है ना?
नहीं, मैंने तो उसे मार डाला। लेकिन आप ये क्यों?...
नागपाशा के मुंह से इतना ही निकलना था कि-
अपना माथा पीट लिया उसने-
अनर्थ! ये तो तुमने अनर्थ कर डाला नागपाशा। एकदम अनर्थ कर डाला तुमने!
क्या?
क्योंकि खजाना पाने के लिए तुम्हें जिस व्यक्ति की खोज है। जिसे तुम मेरे यंत्रों के कारण मंदिर के सपने दिखा रहे हो, वह और कोई नहीं नागराज ही है।
नागपाशा यूं उछला मानो उसके कानों में कोई जबरदस्त विस्फोट हुआ हो-
टीं टीं पीईं पीईं टीं
य... ये आप क्या कह रहे हैं गुरुदेव! ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा नहीं हो सकता!
ऐसा ही है नागपाशा! अपने चारों तरफ देखो! ये यंत्रों का जाल, और उनसे निकलती ध्वनि इस बात का प्रमाण है। तुम तो जानते ही हो कि जिस व्यक्ति की तुमको तलाश है, उसके जन्म का समय और लग्न मुझे मालूम है।

...और एक खास समय में पैदा हुए व्यक्ति अपने शरीर से एक खास तरह की तरंगे निकालते हैं। ये मेरे सारे यंत्र उसी लग्न और समय पर पैदा हुए व्यक्ति की तरंगों को ग्रहण करने के लिए बने हुए हैं!
और ये उन तरंगों को ग्रहण करते ही, ध्वनि करने लगते हैं!
टीं टीं
ओफ्फ नहीं। लेकिन नागराज वह व्यक्ति कैसे हो सकता है जिसे मैं सपने दिखा रहा था!
नागराज तो युवा है, जबकि उस व्यक्ति की उम्र इस समय कम से कम 75 साल होनी चाहिए।
नागराज की उम्र के विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता नागपाशा, लेकिन यह सत्य है कि मेरे यंत्र धोखा नहीं खा सकते। शत-प्रतिशत नागराज ही वह व्यक्ति है, जिसकी तुम्हें तलाश थी।
है नहीं गुरुदेव, अब था बोलिए। क्योंकि नागपाशा महोदय नागराज को समाप्त कर चुके हैं। मार चुके हैं उसे!
अचानक ना जाने नागपाशा को क्या हुआ कि वह तेजी से बाहर की तरफ भाग खड़ा हुआ-
नागराज मेरी वर्षों की खोज मेरा अरमान है, वह नहीं मर सकता। मैं उसे इतनी आसानी से मरने नहीं दूंगा!
कुछ क्षण बाद ही नागराज के शरीर को बुरी तरह झंझोड़ रहा था नागपाशा-
उठ नागराज उठ। तू नहीं मर सकता। तू नहीं मर सकता नागराज! उठ।

मैं कहता हूं उठ, नागराज!
...हार मानकर बैठ गया वह—
उफ् ! सब कुछ अपने हाथों से खत्म कर दिया मैंने। कितनी मेहनत करके मैंने अपने 'इच्छित' व्यक्ति को सपने दिखाकर यहां लाने का प्रबंध किया था और कितनी बड़ी योजना बनाकर मैंने नागराज को खिलौनों से इसलिए मरवाने का इंतजाम किया था कि नागराज कहीं मेरे उद्देश्य की पूर्ति में बाधा न बने...
काफी देर तक नागराज के शरीर को झंझोड़ते हुए जब बुरी तरह हांफ गया नागपाशा तो...
...लेकिन मैं क्या जानता था कि जिसे मरवाने का प्रयत्न करते-करते मैं स्वयं उसे मार चुका हूं, वह मेरा भतीजा हमारे खानदानी अतुलनीय खजाने तक पहुंचने वाला एकमात्र प्राणी नागराज ही है।
उफ् ! संजोग से मैं कितनी बड़ी बाजी हार चुका हूं...
...काश नागराज को मौत देने की गलती करने से पहले मैंने थोड़ा सोच-समझ लिया होता।
बिना सोचे-विचारे काम करने वाले...
...बाद में ठीक तुम्हारी ही तरह पछताते हैं नागपाशा!
नागराज... त... त... तुम जिन्दा हो नागराज!
और... और तुम्हारे तांत्रिक बंधन अपने-आप कैसे खुल गए?

बिल्कुल! और बाकी रही मेरे 'मरने' की बात तो सब कुछ जानने के लिए मैंने अपने मुंह में पहले से ही रखा लाल रंग खून की तरह उगल-कर और प्राणायाम करके अपनी सांसें रोककर मरने का नाटक किया था। अब चूंकि मैं तुम्हारी जुबानी सारी बातें जान चुका हूं तो अब मेरे 'मरे' रहने से क्या फायदा।

अब सीधी तरह बताओ कि उस खजाने का क्या चक्कर है, जिसके लिए तुम मुझे सपने दिखा रहे थे?

बताऊंगा! सब बताऊंगा... पहले मुझे अपने भतीजे के जिन्दा रहने की खुशी तो मना लेने दे!

??

लिपट गया नागराज से नागपाशा–

वाह, अच्छे चाचा हो। तुम पहले जान से मारते हो, और फिर खुश होकर लिपटते हो!

अरे मेरे बच्चे, पहले मैं अपने भतीजे को थोड़े ना मार रहा था, तब तो मैं उस नागराज को मारना चाहता था जो उस खजाने को पाने में बहुत बड़ी अड़चन बन सकता था, जो तुम्हारा सिर्फ तुम्हारा है।

अब चूंकि तुम आ गए हो, इसलिए अपना खजाना संभालो और अपने चाचा को मुक्ति दो। तुम्हारे खजाने की रक्षा के चक्कर में मैं वर्षों से यहां से बाहर नहीं निकला हूं।

नागपाशा की तरफ से अभी भी शंकित था नागराज–
ये चाचा – भतीजे और खजाने का क्या चक्कर है? मैं अभी तक समझा नहीं?
मैं समझाता हूं तुम्हें मेरे बच्चे... सुन!
आज तुम जो इन खण्डहरों को देख रहे हो, यहां कई सौ वर्ष पहले शानदार सर्पमहल हुआ करता था। जहां तुम्हारे पिता और मेरे बड़े भाई तक्षकराज राज किया करते थे...
...नागों का बहुत बड़ा पुजारी था हमारा सारा परिवार...
...और सबसे बड़ी पुजारिन थी राजा तक्षकराज की पत्नी ललिता। कुल देवता कालजयी के प्रताप से उन्हीं की कोख से तुमने जन्म लिया था...
...भैया के पास हजारों लाखों बहुमूल्य सर्पमणियों और अन्य कीमती वस्तुओं का बहुत बड़ा खजाना था...
...जिसके बल पर सारा राज-काज बहुत ही अच्छे ढंग से चल रहा था...
...उसी खजाने के लिए एक दिन किसी अज्ञात शत्रु ने हमारे राज्य पर हमला कर दिया–
हमला!
बड़े भैया उस शत्रु से राज्य की रक्षा करने में जुट गए–
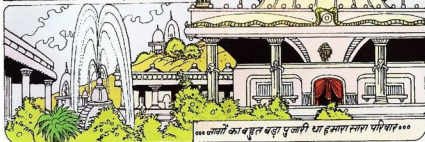
••• और मैं अपने परिवार के कुलदीपक यानी तुम्हारी रक्षा के लिए बड़े भैया की आज्ञा लेकर तुम्हें लेकर वहां से भाग खड़ा हुआ।

लेकिन शत्रुओं ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। उन्होंने मुझे घेरकर मुझे और तुम्हें मारने का प्रयत्न किया। उनसे जान बचाने के लिए मैं ऊंची पहाड़ी से नीचे नदी में कूद गया—

घायल होने की वजह से मैं नदी में गिरते ही बेहोश हो गया और तुम मेरे हाथों छूटकर ना जाने कहां बह गए—

लेकिन उस अज्ञात शत्रु ने जिस खजाने के लिए यह सब किया वह उसे प्राप्त न कर सका, क्योंकि मरने से पहले भैया ने उस खजाने को एक ऐसे सर्प तिलिस्म में रख दिया था, जो ज्योतिषियों ने नक्षत्रों की सहायता से तुम्हारे नाम से बांधा था—

००० और चूंकि तिलिस्म तुम्हारे नाम से बांधा गया था, इसीलिए उसे तुम्हारे अलावा और कोई न तोड़ सकता था, और न ही खजाना प्राप्त कर सकता था०००
००० अब चूंकि तुम मेरे बड़े भैया की अन्तिम निशानी और खजाने के असली हकदार थे इसलिए मैं तुम्हें ढूंढने का प्रयास करता रहा। जो आज सफल ही हो गया।
यानी००० यानी अगर तुम्हारी बातें सच हैं तो मेरा भी एक परिवार था। और वह यहां पर था। मैं प्रोफेसर नागमणि का आविष्कार नहीं हूं०००
००० मैं भी और मानवों की तरह ही पैदा हुआ और पला बढ़ा! कमाल है! मुझे तो ये सब बातें सपने की सी लग रही हैं!
ये स्वप्न नहीं मेरे बच्चे बल्कि सच है। और अगर इस सच को तू अपनी आंखों से देखना चाहता है तो बढ़ जा उस तिलिस्मी रास्ते पर और उसे तोड़कर पहुंच जा खजाने तक!
शाबाश मेरे बच्चे, शाबाश! मुझे तुमसे यही आशा थी। आ मैं तुझे वहां ले चलता हूं जहां से शुरू होता है उस तिलिस्म में पहुंचने का रास्ता जहां वह खजाना रखा हुआ है। जिसमें रखी एक बड़ी पाण्डुलिपि में तुम्हारे यानी हमारे खानदान के बारे में सब-कुछ लिखा हुआ है।
हां! अब तो मुझे यह करना ही होगा, क्योंकि यह सब जाने बिना मुझे चैन नहीं मिलने वाला!
चल! मैं तुझे ले चलता हूं वहां पर!
ओह! अब मुझे नागपाशा का खेल समझ में आ रहा है००० पर पहले मुझे यह पता करना पड़ेगा कि नागराज ही, ललिता देवी का पुत्र है या नहीं!

कुछ देर बाद ही-
विशाल सर्प का यह मुंह ही उस तिलिस्म में प्रवेश करने का रास्ता है जिसमें खजाना रखा हुआ है। हमें इसमें प्रवेश करके बेहद सावधानी से आगे बढ़ना होगा, और चूंकि तुम आगे रहोगे भतीजे, इसलिए तुम्हें तो और भी अतिरिक्त सावधान रहना होगा!
ठीक है चाचा!
आइए, अंदर चलें!
नागराज के पीछे-पीछे ही नागपाशा ने भी उस विशाल सर्प के मुंह में प्रवेश किया-
उफ! इतना भयानक स्थान! कोई कमजोर दिल वाला हो तो यहां उसका हार्ट-अटैक हो जाए!
धड़क तो मेरा दिल भी रहा है। पता नहीं किस मुसीबत से सामना करना पड़े!
जल्द ही-
लो आ गई तिलिस्म की मुसीबत नंबर एक! जिसमें आगे बढ़ने के लिए इस बड़े तालाब को पार करना जरूरी है!
मैं इस तालाब में भरे पदार्थ को खूब पहचानता हूं नागराज! यह पानी से नहीं विष से भरा हुआ है...
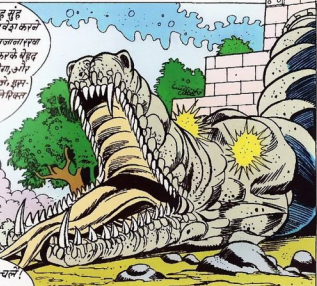
... बेहद घातक विष!
ओह! इसको तैरकर पार करने का सीधा सा मतलब मौत को दावत देना है। लेकिन इसे पार करने का कोई ना कोई तरीका तो होगा ही!
तभी गूंज उठी वह आवाज —
तुमने ठीक सोचा। घातक विष के इस तालाब को सुरक्षित पार करने का तरीका मेरे पास है। तुम मेरे मुंह में बैठ जाओ। मैं तुम्हें उस पार उतार दूंगा!
ओह! सामने मौजूद पत्थर के बने उस नाग के मुंह से गूंज रही है ये आवाज!
तभी दूसरा सर्प भी बोल उठा —
नहीं! इसके मुंह में मत बैठना। यह तुम्हें विष के कुण्ड में डुबो देगा, मेरे मुंह में बैठो मैं तुम्हें पार ले जाऊंगा!
नहीं! इसके मुंह में नहीं... मेरे मुंह में!
नहीं, मेरे मुंह में!
नहीं, मेरे मुंह में!
मैं एकदम सुरक्षित हूं। मेरे मुंह में आओ!
?
!
ओह! ये तो सभी हमें अपने मुंह में बिठाकर विष का कुण्ड पार करवाने की कह रहे हैं।
हां, सुन तो मैं भी रहा हूं। मगर मेरे ख्याल से सबमें से सिर्फ एक ही हमें पार उतार सकता है, बाकी सब हमें बीच में ही डुबो देंगे।

मतलब?
मतलब यह कि तिलिस्म बनाने वाले ने काफी सोच-विचार करके यह स्थिति पैदा की है ताकि इन सर्पों की बातों में आने वाला विष-कुण्ड में ही डूब मरे!
तो फिर कैसे पता लगाया जाए कि इन सर्पों में से वो सर्प कौन सा है जो हमें सुरक्षित विष-कुण्ड के उस पार ले जाएगा!
यह सोचना तो मुश्किल है, लेकिन नामुमकिन नहीं...
...दिमाग का इस्तेमाल करके इस मुश्किल का हल निकल ही आएगा।
उस चितकबरे सर्प के मुंह में आओ चाचा! वही हमें इस विष के कुण्ड के पार ले जाएगा!
फिर जो दिमाग इस्तेमाल किया नागराज ने...
...उससे पहले ही नागराज उसे लेकर चितकबरे सर्प के मुंह में प्रवेश कर गया-
इसी के साथ-
एक तेज गड़गड़ाहट करता हुआ पत्थर का वह सर्प अपने स्थान से सरका-
कड़ड़
और विष के कुण्ड में सरक गया-
छपाक
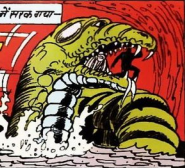
अब वो मजे से तैरता हुआ नागराज और नागपाशा को लेकर किनारे की तरफ बढ़ रहा था—
वाह भतीजे, तूने तो एकदम सही सर्प चुना... लेकिन कैसे?
हम जिस सर्प के मुंह में बैठे हैं, वह पनियाला जाति का सर्प है...
...और चूंकि सर्प जाति में मात्र पनियाला सर्प ही पानी में अच्छी तरह तैर सकता है इसलिए यही इस कुण्ड में तैरकर हमें परली पार उतार सकता है!
वाह रे भतीजे! जवाब नहीं तेरा। सचमुच तेरा जवाब नहीं।
अब देखें तू इसी तरह आगे भी मुसीबतों से बचता हुआ खजाने तक पहुंचता है या नहीं!
एक मुसीबत से निकलने के कुछ देर बाद ही...
...फंस गए वे दूसरी मुसीबत में—
उफ्! बाल-बाल बचे वरना इस नेवले की बड़ी-बड़ी आंखों से निकली किरणें हमारे परखच्चे उड़ा देतीं!
कड़ाक
आगे बढ़ने के रास्ते में यह तो बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी है!
amaan.cooldude18

'रवड़ी' थी! रवड़ी नहीं रही। वो देखो!
ओह, वह तो बिल्कुल ज़िंदा नेवले की तरह बढ़ रहा है!
ऐसे अभी खत्म... ओह... किरणों से इस कोई असर नहीं हुआ!
ओह! बेकार हुए मेरे सांप भी!
...एक अप्रत्याशित ढंग से घूमी नेवले की भारी ओर...
धाड़
घूमकर रह गया का दिमाग—
उस 'करारे' वार के बाद—
...सिर्फ नागराज ही खड़ा होने में सफल हो पाया—
लगता है चाचाजी का दिमाग अंधेरी गलियों में भटकने चला गया है...
...अब तो मुझे अकेले ही इस मुसीबत से छुटकारा पाने का प्रयास करना होगा...

तुरन्त ही नागराज ने अपनी बात का खंडन किया—

नहीं! इस तिलिस्म में वह चित्र बेवजह नहीं हो सकता। जब नेवला यहां है तो बाज भी यहीं-कहीं होगा!

बाज की तलाश में इधर-उधर घूम गई नागराज की नजर को...

...'नजर' आया वह बाज—

बाज के वे पंजे, वे चोंच, वे पंख इस बात की तरफ इशारा कर रहे हैं कि यहां बाज 'जिग्सा-पजल' के रूप में मौजूद है। बाज को 'जिन्दा' करना है तो उस पजल को जोड़ना होगा...

... और यह काम मुझे इस नेवल की पकड़ से बचकर करना होगा!

राज ने फुर्ती से बाज के उन टुकड़ों को जोड़ना आरंभ कर दिया—

'नेवले' से बचते हुए—

केन नेवले की पकड़ से ज्यादा देर तक
ना रह सका नागराज—

! आखिर मैं पकड़ा ही गया।
र की 'पजल' के पूरा होने में
र्फ एक ही टुकड़ा बाकी रह
गया था•••

•••अब मुझे अपनी
सारी ताकत लगाकर
इसके मुंह से छूटने
का प्रयास करना
होगा!

आह!

पूरी शक्ति
लगाने के
बाद भी•••
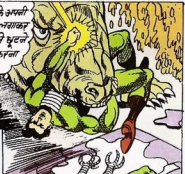
नागराज अपने-आपको उस मौत की पकड़
नहीं छुड़ा पाया—

। मैं अपने-आपको छुड़ा नहीं
रहा हूं, और यह मुझे झंझोड़-झंझोड़
मारे डालने की फिराक में है। अब
में इसके 'हाथों' हर हाल में मरूंगा
ही!

लेकिन मरने से पहले
सर्प-सैनिकों के बल पर
एक कोशिश कर लेने में
क्या हर्ज है।
आहह!

मौत के मुंह में जाते
नागराज के हाथों से
छूटकर वे सर्प सैनिक•••
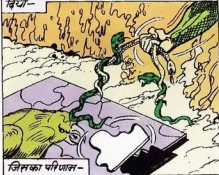
तुरन्त ही नागराज ने नागरस्सी को एक झटका दिया—
जिसका परिणाम—
इस तरह सामने आया—
'सही स्थान' पर जा जुड़ा था वह टुकड़ा—
इसी के साथ नागराज ने देखी तिलिस्म की एक और अनोखी घटना—
जीवित हो उठा वह बाज—
?
क्रियां
भयंकर ढंग से नेवले पर झपट पड़ा—
क्रींईईईई
और नागराज के देखते-देखते ही उसे 'चट' कर गया—
!

ह! अब तो यह मेरी
क बढ़ रहा है। कहीं
सका इरादा मुझे भी
ट करने का तो...
क्रियां
...नहीं!
ओह!
नागराज के संभलने से पहले ही उस बाज ने बेहद तेजी से लपककर उसे दबोच लिया—
और—
उफ... यह तो मुझे
निगल रहा है। और मैं अपनी
कोशिशों के बाद भी इससे
क नहीं पा रहा हूं।
ह! मेरा यह
इस तिलिस्मी बाज
अमर है।
ह! नागराज को पूरा
ल गया वह बाज।
के साथ क्या नाग-
का किस्सा खत्म
हो गया?
गटक
ओह! ये मेरी तरफ
देख रहा है। यानी
अब मेरी बारी है!
भय की अधिकता से बुत सा बना खड़ा रह गया था नागपाशा—

जबकि उस वातावरण में पहुंचकर आश्चर्य-चकित रह गया था नागराज —
कमाल है ... बाज के निगलने के बाद जहां मुझे यमपुरी पहुंचना था, वहां मैं इस रहस्यमयी स्थान पर आ गया हूं, जहां चारों तरफ बड़ी-बड़ी बीनें मौजूद हैं ...
... लेकिन इतनी बड़ी बीनों का यहां होने का मतलब ?
अभी एक पल भी नहीं बीता था कि नागराज को मिल गया उसके सवालों का जवाब —
ओह! ये सब बीनें तो अद्भुत ढंग से बजने लगीं!
उन बजती बीनों के आगे नागराज ज्यादा देर तक अपना संयम कायम न रख सका, और —
इन बीनों से निकलता स्वर मुझे मंत्रमुग्ध किए दे रहा है। मेरे पांव थिरकने को उतावले हो रहे हैं ...
... मेरा दिल झूम उठने को कर रहा है।
लहरा उठा वह किसी मदमस्त सांप की भांति —
amaan.cooldude18
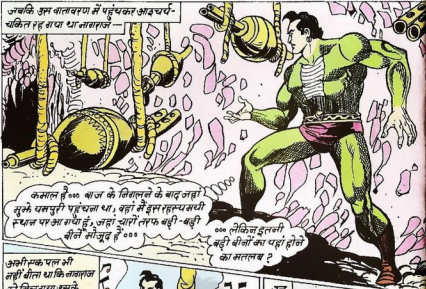
जैसे-जैसे बीन के स्वर में तेजी आ रही थी वैसे-वैसे नागराज के पांव की थिरकन बढ़ती चली जा रही थी—
पींईईईईईई
तभी मंत्रमुग्ध से नाचते नागराज के कानों में बीन के साथ-साथ वह आवाज भी पड़ी—
घड़ड़ड़
नाचते-नाचते ही जब नागराज आवाज की दिशा में घूमा तो उसके रोंगटे खड़े हो गए—
घरड़ड़
लेकिन मैं भागूंगा कहां से? यहां से बाहर निकलने वाले एकमात्र रास्ते पर तो मुसीबत मुंह फाड़े खड़ी है...
... उस भयंकर मोर के रूप में!
ओह! वह क्या, वह बड़ा और भारी गोला तेजी से लुढ़कता हुआ मेरी तरफ ही बढ़ रहा है...
...मुझे इन बीन के स्वरों से अपने-आपको 'मुक्ति' दिलाकर यहां से भागना होगा। ओह!

उफ्! बहुत बुरी तरह फंस गया हूं मैं। एक तरफ तेजी से मेरी तरफ बढ़ता गोला, दूसरी तरफ वह भयंकर मोर और ऊपर से यह बीन के जादुई स्वर जो मेरे कदमों को रुकने का मौका ही नहीं दे रहे हैं।
क्या इस तरह थिरकते हुए मैं बच पाऊंगा इन मौतों से?
हां! अगर मैं अपने थिरकते हुए पांव और बीन के स्वर से घूमते अपने मस्तिष्क को थोड़ा कण्ट्रोल कर सकूं तो मैं ना सिर्फ इन मुसीबतों से बच सकता हूं, बल्कि इन्हें खत्म भी कर सकता हूं...
पींईईईईईईईई
...लेकिन इसके लिए मुझे उस बड़े गोले का एकदम मेरे पास पहुंचने का इंतजार करना होगा!
और फिर जैसे ही वह गोला नागराज के नजदीक पहुंचा वैसे ही—
सर्कस के किसी कुशल खिलाड़ी की भांति नागराज उछलकर उस गोले पर सवार हुआ—

और- मैं अपने नाचते कदमों की वजह से ही इस गोले से नहीं बच पा रहा था! लेकिन अब ये मेरे नाचते कदम ही इस लुढ़कते गोले पर मेरा संतुलन बनाए रखने में बड़े सहायक सिद्ध हो रहे हैं।
एक पल बाद ही-
धाााड़
दो खतरनाक मुसीबतों का एक साथ अन्त हुआ!
जल्द ही-
बीन या ऐसे ही अन्य वाद्य यंत्रों से मधुर स्वर तब ही निकलते हैं जब उनमें मौजूद छिद्रों से हवा का संचार होता है!
अब रही बीनों वाली तीसरी मुसीबत! यह भी कम खतरनाक साबित नहीं होगी। अगर मैंने इससे जल्द ही छुटकारा नहीं पाया तो...
... लेकिन इससे छुटकारा पाने के लिए कोई हल तो ढूंढना ही होगा!
सोच में डूब गया बीनों के स्वर पर थिरकता नागराज —
और हवा का संचार करने वाले इन छिद्रों को अपने नागसैनिकों की मदद से बंद करके इन बीनों के स्वरों को उन्हीं के 'गलों' में घोंट देना मेरे लिए मुश्किल काम नहीं है!
फक्क
फटट

सभी बीनों को बेकार कर देने में नागराज को ज्यादा देर नहीं लगी—
पॉप
टलॉप
इसी के साथ—
एकदम अनोखा है यह तिलिस्म। और उससे भी ज्यादा अनोखे हैं इस तिलिस्म को बनाने वाले, जिन्होंने अपनी विद्या से यह अंदाजा पहले ही लगा लिया था कि इस तिलिस्म को तोड़ने वाला नागशक्तियों का स्वामी होगा!
सर्रर्र
सोचते-सोचते...
...नागराज आगे बढ़ गया—
और जल्द ही पहुंच गया उस स्थान पर—
सामने बहुत से रंग-बिरंगे झरने हैं... जो ऊपर से कहीं से गिर रहे हैं। क्या ये मेरे आगे बढ़ने के रास्ते में किसी तरह की बाधा बन सकते हैं।

अच्छा है ! इन रंग-बिरंगे शरबती झरनों में नहाते हुए निकलने से मेरे शरीर पर चिपकी धूल भी साफ हो जाएगी !
नागराज आराम से कई झरने पार करता चला गया–
और तब वह ठिठका–
पिछले कई झरनों को मैं आराम से पार करता चला गया, लेकिन मुझे कोई गड़बड़ लग रही है। क्योंकि हर झरने से निकलने के बाद मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं लगातार कमजोर होता जा रहा हूं, मुझे लग रहा है कि मेरा शरीर धीरे- धीरे गलता जा रहा है।
अब आगे बढ़ने से पहले सोचना होगा कि ये सब क्यों और कैसे हो रहा है ?
समझना होगा कि ये सारा चक्कर क्या है ?
चक्कर जब नागराज की समझ में आया तो उसकी सारी इन्द्रियां सावधान होती चली गईं—
एक खतरनाक विचार मेरे मस्तिष्क में घुमड़ रहा है। लेकिन यह विचार कहां तक सही है, इसे परखने के लिए मुझे किसी सांप के स्ट्रक्चर का मुआयना करना होगा !
तुरन्त ही नागराज के मस्तिष्क में उभर आई किसी बड़े सांप की शरीर संरचना–
जहर ग्रंथियां
फेफड़े
दिल
तिलिस्म में प्रवेश मैंने सांप के मुंह से किया। फिर जहर ग्रंथियों की जगह, जहर का तालाब मिला...
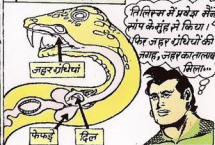
जहां सांप की आंखें होनी चाहिए थीं, वहां पर नेवले ने मुझ पर आंखों से निकलती किरणों द्वारा हमला किया। आंख के स्थान से थोड़ा सा नीचे गला होता है...
...जहां पर बाज मुझे निगल गया। जहां दिल और उसकी धड़कन होती है, वहां पर बीनों के सुरों ने मुझे नाचने पर मजबूर कर दिया...
...और अब मैं आ पहुंचा हूं, सांप के पेट में। जहां पर पाचन क्रिया होती है। और यह पाचन क्रिया होती है, विभिन्न अम्लों और एंजाइमों के द्वारा।
ये झरने उन्हीं अम्ल और एंजाइमों के झरने हैं।
और ये मुझे 'पचा' रहे हैं। इसलिए मेरा शरीर गलता जा रहा है।
अगर मैं इन झरनों में भीगता हुआ थोड़ा सा भी और आगे बढ़ा तो मैं पूरी तरह से पच...
ओह!
एकाएक ये बड़े-बड़े जीवाणु कहां से आ गए?
और ये मुझ पर हमला क्यों कर रहे हैं? इन की तादाद भी बहुत ज्यादा है...
...परंतु आखिर ये हैं क्या?
समझ गया। ये जीवाणु आंतों में रहने वाले परजीवी जीवाणु अमीबा, पैरामीशियम और हाइड्रा हैं।
और ये मुझे अपना भोजन समझकर, मुझसे चिपटे जा रहे हैं!
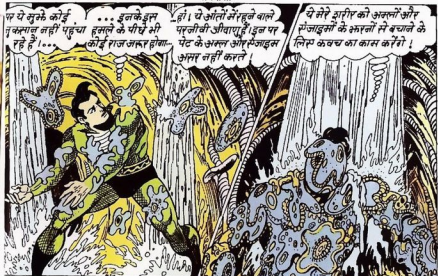
पर ये मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं।...
...इनके इस हमले के पीछे भी कोई राज जरूर होगा...
...हां। ये आंतों में रहने वाले परजीवी जीवाणु हैं। इन पर पेट के अम्ल और एंजाइम असर नहीं करते।
ये मेरे शरीर को अम्लों और एंजाइमों के झरनों से बचाने के लिए कवच का काम करेंगे!
नागराज ने झरनों से भरा तिलिस्म पार करना शुरू कर दिया—
तिलिस्म के उस हिस्से को पार करते ही, जीवाणु अपने-आप गायब हो गए—
मैंने इन अद्‌भुत घटनाओं को अपनी आंखों से ना देखा होता तो इन्हें कभी सच ना मानता!

खैर, अब मुझे पीछे की छोड़कर आगे बढ़ने के बारे में सोचना चाहिए क्योंकि आगे बढ़ने के लिए अब मुझे सिर्फ वह सामने वाली संकरी गुफा दिख रही है जो किसी सांप की आंत नली के समान है।
जिसमें सांप की तरह रेंग कर ही आगे बढ़ा जा सकता है।
और इस काम को मेरे जैसा ही कोई इन्सान अंजाम दे सकता है।
सर्प की तरह तेजी से उस रास्ते पर रेंगते नागराज को०००
००० जल्द ही रुक जाना पड़ा—
ओह! आगे तो रास्ता बन्द है। अब०००

नागराज के कुछ सोचने पहले ही—
ओह, यह क्या! यहां के वातावरण में तो बदबूदार गैस फैलने लगी है...
...जो धीरे-धीरे मेरी सांसों के साथ मेरे शरीर में प्रवेश कर रही है। और मेरे मस्तिष्क पर बेहोशी की चादर सी फैलाने लगी है।
मुझे जल्द से जल्द यहां से निकलना होगा। वरना यह ज़हरीली गैस मेरा क्रिया कर्म नहीं कर देगी। लेकिन यहां से निकलूं कैसे? इस गैस से मुझे चक्कर आ रहे हैं। दिमाग़ शून्य हुआ जा रहा है। मैं कुछ भी सोच नहीं पा रहा हूं!
सबसे पहले इस धुएं को हटाने का इंतजाम करना होगा। ताकि मैं सही तरीके से सोचने-समझने लायक बन सकूं!
और धुएं को बाहर निकालने का सबसे अच्छा तरीका है... एग्जास्ट फैन...
कुछ ही पलों में नागसेना ने एक विलक्षण, 'एग्जास्ट-फैन' तैयार कर दिया—
विषदंश! सिर्फ तुम ही एक ऐसे नाग हो जो शक्तिशाली भी हो और अपने शरीर को तीव्र गति से गोल घुमाने की क्षमता भी रखते हो।
तुमको ही इस पंखे की मुख्य धुरी बनना पड़ेगा।

विषदंश ने नागराज को उत्तर एक फुंफकार द्वारा दिया। और फिर उसका शरीर, गोल घूमना शुरू हो गया—
'नाग-पंखा' घूमने लगा—
और धुआं तेजी से आंत नली की सुरंग के दूसरे छोर की तरफ खिंचने लगा—
आह! अब थोड़ा सा चैन पड़ा! लेकिन इस मुसीबत से बचने का रास्ता मुझे जल्द से जल्द सोचना होगा!
क्योंकि धुआं अभी सुरंग में भर रहा है। मेरी नागसेना भी ज्यादा देर तक इस गैस को सह नहीं पाएगी!
मुझे नाग की शरीर-संरचना को बार फिर ध्यान में ल होगा... उसी में य से बच निकलने रास्ता छिपा होगा
मैं इस वक्त नाग के पेट के निचले हिस्से, यानी आंत नली में हूं। और हां! मैं तो यह बातें भूल ही गया था, जिसे एक बच्चा तक जानता है! और वह यह...
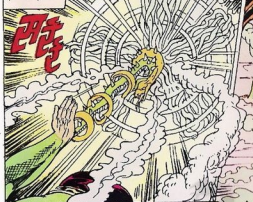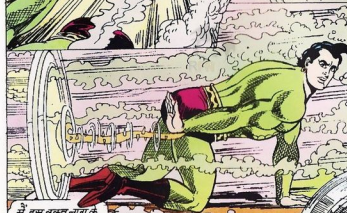
...कि सांप का पेट वाला हिस्सा...
...काफी कमजोर...
धमम
...होता है।
कड़, ड़ड़, म
जल्द ही नागराज वहां की जमीन को तोड़ता हुआ...
नीचे आ गिरा–
वहां–
जहां मौजूद था...
खजाना!
यानी मैं तिलिस्म को तोड़कर, खजाने तक पहुंच ही गया! और अगर ये खजाना असली है...
...तो नागपाशा की कहानी का एक-एक शब्द सही है!
इसके लिए सबसे पहले तो यह चेक करना पड़ेगा कि यह खजाना असली है भी या नहीं...
खजाने की तरफ बढ़े नागराज के कदम...
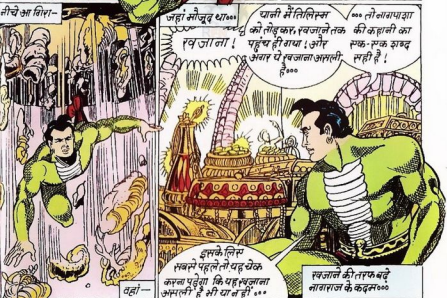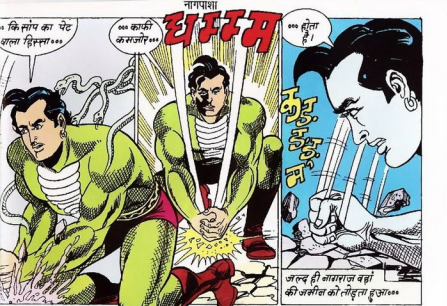
••• अचानक जमीन से और जुबान 'तालू' से चिपककर रह गई—
?
आंखें आइचर्य से बाहर निकलने की हद तक 'गोल' होती चली गईं—
उसे देखकर, जिसका रूप नागराज जैसे नागपुरुष के लिए भी अकल्पनीय था—
उफ़ ! ऐसी खतरनाक और विशाल प्रजाति का भयंकर सर्प मैंने आज तक ना देखा और ना सुना !
फ्ऽऽऽऽऽऽम
'कालजयी' के होते खजाने तक किसी का भी पहुं असंभव है•••
••• एकदम असंभव !
उसके फुंफकारने से उस स्थान का जर्रा गूंज उठा—
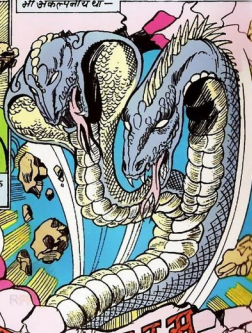
ई असंभवों को संभव बनाता
ा यहां पहुंचा हूं मैं, इसलिए
से भी संभव बनाकर ही
दम लूंगा...
तड़ाक
कालों तक को जीतने वाले
कालजयी को रास्ते से हटाने की सोचना
मूर्खता है नागराज...
...और तुम्हें इस
मूर्खता की कड़ी से कड़ी
सजा मिलनी चाहिए!
भड़ाक
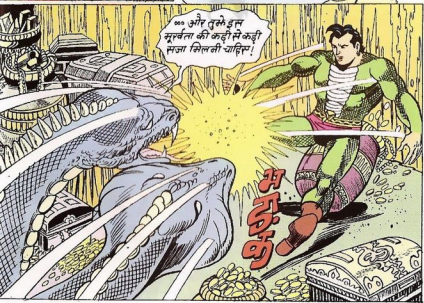
एक ही वार में नागराज को कालजयी की शक्ति का अन्दाजा हो गया—
ओह! यह तो बला की शक्ति का धारक सर्प है। इसकी चपेट से मुझे बचना होगा!
वर्ना ये मुझे चटनी की तरह पीस देगा!
बचने के साथ-साथ ही मुझे अपने सर्प-सैनिकों से इसे बन्दी बनाकर बेबस करने का भी 'काम' करते रहना चाहिए।
नागराज के हाथों से निकलकर कालजयी के फन से बुरी तरह लिपट गए सैकड़ों सर्प—
लेकिन वे एक पल भी वहां न रह पाए, क्योंकि दूसरे पल—
ये छोटे-छोटे 'मासूम सपोले' कालजयी को बंदी बनाने में कहां सफल हो पाएंगे नागराज··· मुझे बंदी बनाना है तो वह सर्प ला···

... ऐसे !
उफ़ !
... या फिर ऐसे !
उफ़ ! अपने शरीर पर तेज नेजे धारण किए ये अद्‌भुत सर्प अगर मेरे शरीर को छू भी गए तो मुझे काटकर रख देंगे !
लेकिन इस छोटी और तंग जगह पर कालजयी के मुंह से उगलते कातिल सर्पों से बचूं तो कैसे ?
एक ही तरीका है...
और वह है...

यह...
... अब यह जो भी करे, मगर मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकता। जबकि अब मैं इसे खत्म कर सकता हूं।
मुझे इसके शरीर को 'काट' कर अपने शरीर का वह घातक विष इसके शरीर में पहुंचाना होगा जो किसी भी प्राणी को पल भर में ही मोम की तरह पिघला देता है। अब यह भी पिघलेगा!
खच
अगले पल नागराज को हैरान कर देने वाले थे, क्योंकि उन पलों में वह हो गया था, जो आज से पहले कभी नहीं हुआ था—
हैं! मेरे भयंकर विष ने इसका 'बाल भी बांका नहीं किया'?
मेरा यह गुमान चूर-चूर हो गया कि मेरा जहर विश्व के हर प्राणी को पिघला सकता है! उफ्... ये क्या चमत्कार है?
नागराज आंखें फाड़े उस चमत्कार को देखता रह गया—

जबकि कालजयी ने अद्भुत ढंग से अपनी
पीछे से उठाकर उसके शरीर से लपेट दी—
?

और फिर—
धाड़ड़ ड़ड़ड़
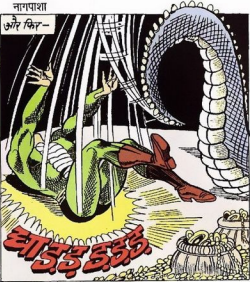
इतनी तेज पटकी के बाद भला नागराज की आंखों के सामने अंधेरा कैसे ना छाता—

फर्र्र्र्स
उसकी अंधियारी आंखें को कुछ पल के लिए दिखना बन्द हो गया वह कालजयी...
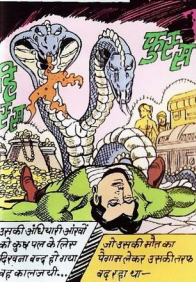
ठीक तभी—
नागराज द्वारा पहले से ही तोड़े जा चुके तिलिस्म के रास्ते को पार करता हुआ, आ पहुंचा वहां पर नागपाशा—

जो उसकी मौत का पैगाम लेकर उसकी तरफ बढ़ रहा था—

जिसकी सांसें सामने का दृश्य देखकर थम गईं—

ओह! नागराज कालजयी का शिकार बनने जा रहा है... अब वह कालजयी से नहीं बच सकता!
मुझे तुरंत ही खजाने का ख्याल छोड़कर यहां से भाग लेना चाहिए। क्योंकि नागराज के के बाद कालजयी का निशाना मैं ही होऊंगा!
ठहर... ठहर अभी!
देख कालजयी नागराज को मारने की जगह कुछ और ही कर रहा है!
जूते उतार रहा है वह नागराज के...
... पर क्यों?
कालजयी की हरकत ने जवाब तुरन्त ही नागपाशा को सुझाया-
वह नागराज के तलुवों में कोई पहचान चिन्ह ढूंढ रहा है। जिससे वह नागराज की पक्के तौर से पहचान कर ले...
और... और! अब वह सीधा खड़ा हो रहा है... नागराज के मुंह पर कोई किरण डाल रहा है। नागराज को होश में ला रहा है। यानी... यानी...
... वह नागराज को पहचान गया है। नागराज ही असली वारिस है...
... इस खजाने का!

बात बिल्कुल वही थी–
उठो, पुत्र नागराज!
म... मैं जिन्दा हूं!
आपने मुझे मारा नहीं? पर क्यों?
क्योंकि तुम्हारी मेरी लड़ाई एक नाटक मात्र थी। मैं चाहता तो तुमको एक पल में भस्म कर सकता था! परन्तु मेरा उद्देश्य तुमको बेहोश करके तुम्हारे तलुवों में एक सूक्ष्म 'सर्प-चिन्ह' देखना मात्र था...
... वह 'सर्प-चिन्ह' तुम्हारे तलवों पर मौजूद है! इसीलिए तुम ही इस राजघराने के वंशज और खजाने के असली वारिस हो! अब अपना खजाना संभालो और मुझे विदा भी दो!
एक पल, रुकिए कालजयी! मेरे मस्तिष्क में कई सवाल घुमड़ उठे हैं! आप कौन हैं?
मैं तुम्हारे वंश का कुलदेवता नाग कालजयी हूं नागराज, और इस खजाने का रक्षक भी...
ओह! इसीलिए मेरे काटने पर भी आपका बदन पिघला नहीं!
तुम्हारे शरीर में जो जहर है नागराज, वह मेरे ही भीषण हलाहल का एक छोटा-सा हिस्सा है। मेरे गलने का तो प्रश्न ही नहीं था...
... वह तो मैंने, अपनी विष-ग्रंथियों को दबा लिया। वरना मुझे काटने के बाद 'तुम' पिघल जाते!
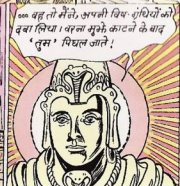
अब मैं चलता हूं। लेकिन जाने से पहले तुमको एक उपहार देके जाना चाहता हूं।
मैं अपने शरीर में वास करने वाले अति विशिष्ट 'नागफनी-सर्पों' को तुम्हारे शरीर में प्रविष्ट करा देता हूं।
इन सर्पों के अन्दर कई खूबियां हैं जो तुमको धीरे-धीरे अपने आप पता चल जाएंगी! अब अपना खजाना संभालो और मुझे विदा दो!
विदा, नागराज!
कुलदेवता कालजयी लुप्त हो गए-
ओह! रोमांचक मुलाकात रही कुलदेवता से मेरी! अब यहां सभी पाण्डुलिपि हासिल कर लूं तो मुझे बाकी बचे रहस्यों का पता भी चल जाएगा।
तभी नागराज के कानों में गूंजी नागपाशा की मक्कारी भरी आवाज-
रुक जा भतीजे, खजाना तू नहीं, मैं हासिल करूंगा। क्योंकि इसे हासिल करने के लिए ना केवल मैंने वर्षों रात-दिन सपने देखे हैं बल्कि इसे पाना मेरे जीवन का पहला और अंतिम अरमान भी है।
तुम पर मुझे शक तो पहले से ही हो रहा था! लेकिन तुम्हारे शब्दों से आती षड्यंत्र की बू ने उस शक को पक्का कर दिया, नागपाशा...
...अब तो मुझे यह भी शक है कि तुम मेरे चाचा हो भी या नहीं!

च्च्च! इतना घोर अविश्वास! मैं इतना झूठ नहीं बोलता, भतीजे! हूं तो मैं तेरा चाचा ही! पर मेरा इरादा तुम्हें यह खजाना सौंपने का कभी भी नहीं था। इस बारे में मैंने तुमसे झूठ ही बोला था!
दरअसल मेरा इरादा तुम्हारे जरिए, इस खजाने तक पहुंचना था। और वह मैंने कर लिया!
अब तेरी जिन्दगी का मकसद पूरा हो चुका है, भतीजे! तेरी जिन्दगी को अब मैं यहीं खत्म करता हूं!
तुम मेरे चाचा होकर मुझे मारोगे...
...और वह भी...
...इस नकली खजाने के लिए?
नकली?
नजरें तो सचमुच तेज हैं तेरी नागराज! दरअसल ये सारा यत्न, इस खजाने को बचाने का आखिरी यत्न था!
ताकि कोई, कालजयी को भी परास्त करके, अगर यहां तक पहुंच ही जाए तो भी उसके हाथों नकली खजाना ही लगे...
...जबकि असली खजाना तो उस बड़े सन्दूक में भरा पड़ा है!
हां, चाचाजी! नागराज की आंखें बहुमूल्य धातुएं और रत्नों को परखने में कभी धोखा नहीं खाती!
यह सारा सोना, रत्न नकली हैं!

लेकिन तेरी आंखें वह खजाना देख नहीं पाएंगी, भतीजे नागराज!
नागपाशा ने चला दिया, स्तब्ध खड़े नागराज पर अपनी 'आग-शक्ति' को—
लेकिन नागराज तक पहुंचने से पहले ही—
अरे! ये क्या हुआ?
मेरी शक्ति को किसने नष्ट करा?
मैंने!
नागतंत्रिका नगीना!
हां, नागपाशा मैं! जीती-जागती नगीना! ...
...और ये सब तुम्हारे उस धोखे का जवाब है, प्यारे चाचा जी, जिसके बारे में मुझे और नगीना को पहले ही संदेह था कि तुम हमें धोखा दिए बिना नहीं मानने वाले!
यह हमारे खिलाफ रचे गए तुम्हारे उस षड्यंत्र का जवाब है, जिसका आभास हमें पहले ही हो गया था। तभी अपनी शक्ति से तुम्हारे किले के सामने लाकर...
हाऽऽऽह!

...नागतंत्रिका ने मुझसे कहा था—
यही तुम्हारे सपनों का मंदिर है, नागराज! लेकिन इस मंदिर में भगवान नहीं, ऐसे शैतान मौजूद हैं, जो तुम्हें तिल-तिल करके मारने के सपने देख रहे हैं।
जिन का मुखिया है नागपाशा, जिसने अपने किसी उद्देश्य के लिए तुम्हें मरवाने के लिए दुनियाभर के सुपर विलेन्स को इकट्ठा किया है।
फिर धीरे-धीरे नागतंत्रिका मुझे सब-कुछ बताती चली गई।
सब कुछ जानकर तुम्हारा चरित्र अत्यन्त रहस्यपूर्ण लगा, मेरे जैसा ही ख्याल नगीना का भी था। तभी हमने मिलकर एक प्लान बनाया...
...नगीना द्वारा मुझे कैद करके तुम्हारे सामने पेश करना और मेरे व नगीना के मरने का नाटक करना उसी प्लान का हिस्सा थे!
तुम्हारा मरना तो नाटक हो सकता था, लेकिन नगीना का मरना नाटक कैसे हुआ? अपनी शक्ति से मैंने तो उसकी गर्दन ही अलग कर दी थी!
नगीना ने ही मुस्कराते हुए नागपाशा के सवाल का जवाब दिया—
श्रीमान नागपाशा जी! जिसकी तुमने गर्दन उड़ाई थी, वह मैं नहीं मेरा जाल से बना हुआ 'अक्स' था। मैं तो अदृश्य होकर हर समय नागराज के साथ उसकी मदद कर रही थी।
ओह! तुम शुरू से ही नागराज को मारने के पक्ष में नहीं थी!

नहीं! क्योंकि नागराज से पिछली बार हारने के बाद मैंने बुरे काम ना करने की सौगंध उठा ली थी। और अच्छे काम करते हुए नागराज का साथ देने का प्रण कर लिया था।
ओह! यानी नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली ने हज किया... कोई बात नहीं। अब से पहले मैं तुम्हारे जाल में फंसकर तुम्हें मार ना पाने में सफल ना हुआ तो क्या हुआ...
...अब मार देता हूं।
हमें मारने की नहीं...
...अपने मरने की तैयारी कर नागपाशा, क्योंकि एक तो तू नगीना की शक्तियों से ही नहीं निपट सकता...
...ऊपर से नागराज भी मेरे साथ है!
सर्रीर्री।।क
गीदड़ जितने भी हों नागसुंदरी, मगर अकेले शेर का मुकाबला फिर भी नहीं कर सकते!

नागराज ने बौछार कर दी सर्प-सैनिकों की—
तेरे सर्प-सैनिक औरों का जिस्म जकड़ते होंगे तो बहुत मजा आता होगा नागराज...
...देखें! ये तेरे ही सर्प-सैनिक तेरा ही जिस्म जकड़ें तो क्या होगा?
अपने ही सर्पों से जकड़ा गया नागराज—
ओह! गजब की शक्ति है नागपाशा के पास। मेरे सर्प-सैनिकों को सम्मोहित कर मेरे ही खिलाफ कर दिया।
तो क्या हुआ नागराज! नगीना अभी अपनी शक्ति से तुम्हारे सर्पों को सामान्य कर देती है।
अपनी शक्ति से नागराज को बचाकर...
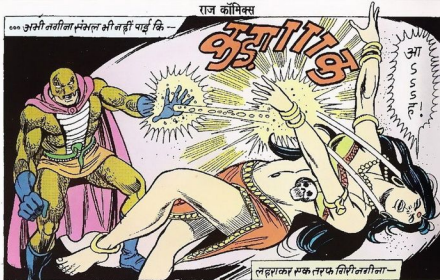
... अभी नगीना संभल भी नहीं पाई कि —
कड़ाााक
आऽऽऽह!
लहराकर एक तरफ गिरी नगीना —
और अब तो नगीना के प्राणों ने उसके शरीर का साथ छोड़ दिया होता, अगर नागराज उसे बचा ना लेता —
इस पर अपनी घातक विष-फुंफकार का इस्तेमाल करना होगा!
ओह! ये क्या? नागपाश पर तो इसका कोई असर नहीं हुआ!
हा हाहा हा हा!
फूऊऊ
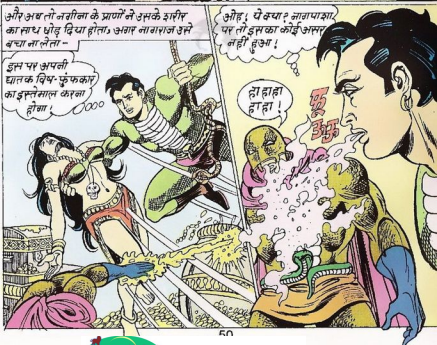
मेरे पुराने तो सभी तरीके नागपाशा पर
कार हुए। अब तो इसे समाप्त करने का
ोई नया तरीका ही सोचना पड़ेगा! लेकिन
ाह नया तरीका होगा कौन सा?
अचानक–
नया तरीका! वाह! आ गया समझ में!
अपनी उस नई शक्ति का कमाल
ो कालजयी की बदौलत मेरे
ारीर में मौजूद है, जिसका
नाम है...
...'नागफनी सर्प'!
शानदार ढंग से नागराज की नई शक्ति ने अपना काम कर दिखाया–
नागफनी सर्पों की वजह से नागपाशा की गर्दन उसके धड़ से कटकर...
... नीचे जा गिरी–
धम
धम
म
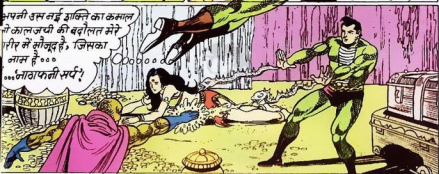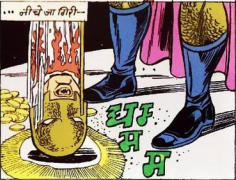
इसी के साथ हुआ घोर आश्चर्य-
नागपाशा की गर्दन हवा में लहरा-कर ठहाका लगा रही थी-
?
हा हा हा
...अमर है हा हा हा!
हा हा हा... मेरी गर्दन को मेरे धड़ से अलग करके अगर तू ये सोच रहा है नागराज कि तूने मुझे मार दिया तो यह तेरी भूल है। नागपाशा नहीं मरेगा, वह अमर है।
इस बार नागफनी-सर्पों का निशाना बने थे नागपाशा के हाथ-
लेकिन उन हाथों को भी दुबारा जुड़ने में ज्यादा देर नहीं लगी-
हा हा हा... नागराज आखिर तू समझता क्यों नहीं कि तेरी ये सारी कोशिशें बेकार हैं। हा हा हा!

प्रभ नागराज और नगीना को छोड़कर नागपाशा खजाने
बड़े बक्से की तरफ बढ़ गया —
फ़ ! इसे मारा नहीं जा
कता। इसे घायल नहीं
या जा सकता। फिर इसे
कें तो कैसे ?
तुमसे लड़ते-
लड़ते अब मैं बोर हो गया हूं।
इसलिए अब मैंने खजाने का
बक्सा लेकर यहां से रवाना होने का
निर्णय लिया है। लेकिन मेरे जाने के
बाद ये मत सोचना कि तुम मौत से
बच जाओगे। मरोगे तो तुम हर हाल
में। और तुम्हें मौत देगा मेरा
सेवक...
...कालभुजंग !
कड़ड़ड़म

हा हा हा... सिहरन सी दौड़ गई ना कालभुजंग को देख कर। ये तुम्हें मौत देने का काम बड़े ही अच्छे ढंग से अंजाम देगा!
कालभुजंग!
उफ़!
हा हा हा... ठीक कहा स्वामी ने। ऐसे कामों के लिए मैं काफी सिद्धहस्त हूं। वर्षों से स्वामी के लिए सैकड़ों हत्याएं कर चुका हूं मैं... उन्हीं में अब तुम्हारा नाम भी शामिल होगा। हा हा हा!
शाबाश कालभुजंग, शाबाश! खत्म कर डाल इन्हें। मैं जरा दर्शन कर लूं उस खजाने के। जिसे देखने के लिए वर्षों से मेरी आंखें तरस रही हैं।
खजाने के बक्स के पास पहुंचकर

खुशी से आंदोलित होते नागपाशा ने एक झटके से उस बक्से का ढक्कन हटा दिया—
इसी के साथ सैकड़ों बिच्छू के कांटे सा उछला—
छूट गया उसके हाथ में थमा बक्से का भारी ढक्कन—
धड़ड़ड़ड़ड़ड़ाम
पसीने से तर-बतर हो गया उसका शरीर—
ढक्कन बंद होने की आवाज ने मानो नागपाशा को नींद से जगाया—
दूसरे ही क्षण—
नागराज... नगीना... तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि मैं खजाने को यहीं छोड़कर जा रहा हूं। अगर तुम कालभुजंग से अपनी जान बचाने में सफल हो जाओ तो यह खजाना तुम्हारा ही सकता है।
तेजी से वहां से बाहर निकल गया नागपाशा—
स्तब्ध नागराज और नगीना को कालभुजंग से जूझते हुए छोड़कर—
समझ में नहीं आया नगीना कि जिस खजाने के लिए नागपाशा ने इतना सब-कुछ किया उसे वह यूं ही हमारे लिए छोड़कर भाग गया!
हैरान मैं भी हूं। लेकिन फिलहाल इस मुसीबत से छुटकारा पाने की सोचो नागराज!...
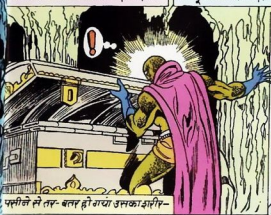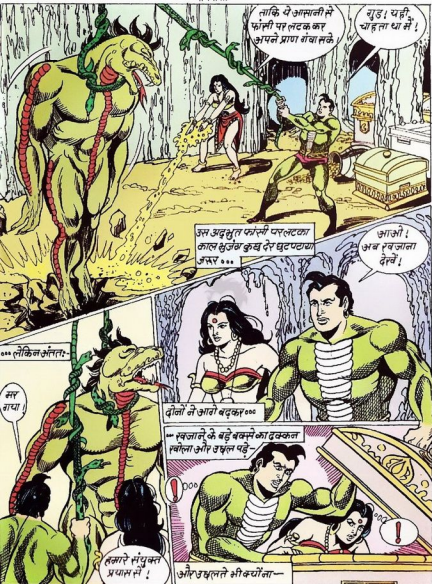
...खज़ाने के बारे में बाद में सोचेंगे।
हाऽऽऽऽह!
ये अपने किसी तरीके से मात खाता नजर नहीं आ रहा। इसलिए इसे खत्म करने के लिए मैंने एक तरीका सोच लिया है। और उस तरीके में हमें संयुक्त रूप से काम करना होगा।
जैसे मैं इसके लिए ऊपर छत पर लटके लोहे के मजबूत कुण्डे की सहायता से मजबूत सर्प रस्सी का फांसी का फंदा तैयार करूंगा।
और मैं अपनी शक्ति की मदद से तेजी से इसके पैरों के नीचे की जमीन में एक बड़ा गड्ढा तैयार करूंगी।

ताकि ये आसानी से फांसी पर लटक कर अपने प्राण गंवा सके।
गुड! यही चाहता था मैं!
उस अद्भुत फांसी पर लटका काल भुजंग कुछ देर छटपटाया जरूर...
आओ! अब खजाना देखें!
...लेकिन अंततः
मर गया!
दोनों ने आगे बढ़कर...
...खजाने के बड़े बक्से का ढक्कन खोला और उछल पड़े—
हमारे संयुक्त प्रयास से!
और उछलते भी क्यों ना—

दोस्तो... नागराज व नगीना की तरह ठीक यही सवाल आपके मस्तिष्क में भी हथौड़े की भांति बज रहा होगा। लेकिन अगर आप थोड़े से दिमाग का इस्तेमाल कर इस सवाल का जवाब खोज सकते हैं तो फिर देर किस बात की। दौड़ाइए अपना दिमाग और लिख भेजिए हमें इस सवाल का 'जवाब'। सम्पादक.

इस कॉमिक के सभी सवालों का जवाब आपको मिलेगा नागराज के आगामी विशेषांक खजाना में
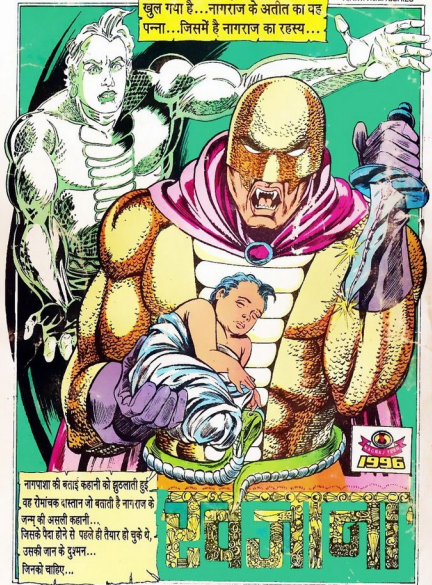
A.H.W. TIGER SERIES
खुल गया है...नागराज के अतीत का वह पन्ना...जिसमें है नागराज का रहस्य...
NAGRAJ YEAR
1996
नागपाशा की बताई कहानी को झुठलाती हुई वह रोमांचक दास्तान जो बताती है नागराज के जन्म की असली कहानी...
जिसके पैदा होने से पहले ही तैयार हो चुके थे, उसकी जान के दुश्मन...
जिनको चाहिए...
खजाना
इस कॉमिक्स विशेषां
एक ट्रेडिंग
षांक
amaan.cooldude18
Trying To Be Perfect As Mr Perfectionist